प्रातःक्लास           पिता श्री           ओमशान्ति           18-11-67

रिकार्डः - हमारे तीर्थ न्यारे हैंः- ओमशान्ति। बच्चों ने गीत सुना और बुदिध का योग बाप के तरफ गया। बच्चों को अपने तीर्थों का पता पड़ा हैं। वह भी तीर्थ यह भी तीर्थ। तुम्हारी तीर्थ तो बहुत सहज हैं। तुम एक ही बार यह तीर्थ करते हो। बुदिध का योग लगाते हो। यह भी समझते हो कौन समझाते हैं। यह है भाग्यशाली रथ। जिस में बेहद का बाप आये बच्चों कोपढ़ाते हैं। यात्रा भी सिखलाते हैं। यह यात्रा और कोई सिखलाये न सके। क्योंकि आत्माभिमानी तुम ही बनते हो। सब को आत्माभिमानी बनना पड़ता हैं। यही समझाना पड़ता हैं। मुल बात हैं समझाने की यह। आत्मा पहले2 प्युर गोल्डेन एज में थी। अभी आयरन एज में हैं। सब से जास्ती जरूरी बात यह हैं समझाने की। अवफिर आत्मा को पतित से पावन बनना हैं। अभी हैं कलियुग। फिर सतयुग जरूर होंगा। इसलिए तुमको पवित्र जरूर बनना हैं। नहीं तो वापस जाये न सकेंगे। आत्माएं सब अविनाशी हैं। प्युर बनने लिए या तो हैं योग बल, या तो सजाएं। योग को तुम हा समझते हो। योग का हो ढीटोरा पीटना हैं। बाकि कोई काम की चीज़ हैं नहीं। जब तक मनुष्य अपन को आत्मा न समझे तब तक उल्टा से सुल्टा हो न सके। वापस जाये न सके। मुल बात हैं उल्टा से सुल्टा बनना हैं। कहांभी जाते हो यह पक्का कर लो। विलायत में जाते हैं तो वहां बुदिध का योग बहुत इधर-उधर फैल जाता हैं। यह अवस्था वहर में नहीं रहती। कोटों में कोउ विरले हैं जो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। दुनिया इतने ढेर मनुष्य हैं कोई भी अपन को आत्मा नहीं समझते। देहाभिमान में आये उल्टा जो लटक पड़े हैं, तो फिर सुल्टा बनाने वाला भी चाहिए ना। मलयुदध करते हैं तोसुल्टा सुलाते हैं। तुमको भी अभी बाप सीधा रास्ता बताते हैं। पहले2 तो यह पक्का करो हम आत्मा हैं। उल्टे से सीधा जरूर होना हैं। अपन को आत्मा समझने बिगर बाप को याद करने का अकल ही नहीं आवेंगा। मन्मनाभव कहना भी बहुत सहज हैं। परन्तु उनका कोई अर्थ भी समझे ना। अब बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। और सब की वुधि देह के सम्बन्ध में लटकी हुई हैं। बाप कहते हैंदेह के सब विकारी बन्धन तोड़नी हैं। इन आँखों से जो कुछ देखते हो इन से वैराग्य। बाप तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। यह याद रहना चाहिए। बड़ी मंजिल हैं। ऐसे नहीं हम शिव बाबा के बने तोनर से नारायण बन ही जावेंगे। नहीं। ऐसी सस्ती चने खाने की नहीं हैं। बहुत मेहनत हैं। इसमें एकान्त में विचार सागर मथन करना चाहिए। मैं आत्मा हूं। अब जाना हैं अपने घर। इस दुनिया में जो कुछ हैं, विलायत भी हैं, जानते तो हैं ना। ऐसे तो कोई नहीं कहेंगा विलायत है नहीं। तो बाप कहते हैं वुधि में जो कुछ आता हैं इन सब को छोड़ना हैं। अब हमको वापस घर जाना हैं। हम आत्माएं सब मुल वतन में थे। फिर सतयुग में हम बहुत थो ड़ आये। बाकि सब स्वीट होम में थे। सतयुग में सुख भी था। शान्ति भी थी। यहां तो घर घर में अशान्त ही अशान्त हैं। इसलिए बाप कहते हैं यहां तुम जो कुछ देखते हो इनका त्याग। अपन को आत्मा अपने स्वीट होम को याद करो। नई दुनियामें यह तुम्हारे शरीर भी नहीं होंगी। आत्मा तो हैं ही अविनाशी। सिर्फ चोला बदल लेंगे। यह समझ की बात हैं ना। मनुष्य तो बिलकुल ही बेसमझ बन पड़े हैं। अभी तुम एक बार समझदार बनते हो 21 जन्म लिए। फिर आधा कल्प बाद तुम उल्टे लटक पड़ते हो। कितना वन्डर फुल खेल हैं। वह भी अविनाशी हैं। इन बातों को कोई भी समझ न सके। भल तुम अखबार में डालो। आवाज़ जरूर फैलेंगा परन्तु फिर टु लेट हो जावेंगे। विवेक कहते हैं आवाज़ सब जगह जाना चाहिए। जिस के लिए तो बाबा समझाते हैं परन्तु कोई करे भी ना। त्रिमूर्ति चित्र भी हैं। कितना किलियर हैं। त्रिमूर्ति शिव बाबा हमको पढ़ाते रहे हैं। फिर हम विष्णु पुरी के मालिक बनेंगे। ब्रहमा और विष्णु का भीकितना अच्छा राज़ समझाया हैं। सभी बच्चों की बुधि में हैं। बच्चों से भी पूछा जाता तो हैं तो सब कहते हैं हम ल०ना० बनेंगे। इन से कम बोल भी नहीं सकते। क्योंकि यह हैं नर से नारायण बनने की सत्य कथा। तो फिर ऐसे कैसे कहेंगे हम राम-सीता बनेंगे। एमआबजेक्ट ही हैं नर से

नारायण बनने की। शुभ बोलना चाहिए ना। राम सीता क्यों कहें। नामी-ग्रामी भी सत्य नारायण की कथा हैं। बाकि बच्चे यह तो समझते हैं सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही हैं। उसमें ऊंच पद पाने मेहनत चाहिए। जो मेहनत नहीं करते हैं वह खुद भी समझते हैं हम से मेहनत पहुंचती नहीं। चार्ट रख नहीं सकते। क्या लिखेंगे, 5-10 मिनट से क्या पद मिलेगा। फिर भी शुक्र हैं जो यहां बैठे हैं। कईयों को तो अन्दर मे आता हैं इस से तो चलें जावें। गृहस्थ व्यवहार में जो रहते हैं वहां का खान-पान-वायब्रेशन, वायुमंडल कितना खराब होता हैं। वहां से यहां आने में बड़ा मज़ा आता हैं। परन्तु कोई कोई को फिर उस तरफ की कशिश होती हैं। बाप भी कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही हैं।। यहां कितने बैठ जावेंगे। तुम्हारा हैं ही बेहद का सन्यास। बुधि से पुरानी दुनिया को भूल जाना है। अपन को आत्मा समझ सुल्टी हो जाओ। बाप को भी अभी ही याद करना है। सतयुग में तो याद करने की बात ही नहीं। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर ड्रामा पलैन अनुसार थोड़ा कर के नीचे उतरना होता हैं। सतोप्रधान से फिर सतो-रजो तमो में आना ही हैं। यह चक्र का राज़ समझना चाहिए। तुम्हारी बुधि में एक सेकन्ड में सारा चक्र फिरता रहता हैं। बाबा के बुधि में सारा चक्र सेकन्ड में फिरता रहता हैं। वास्तव में स्वदर्शनचक्रधारी तो बाबा की आत्मा को कहना चाहिए। जो तुम आत्माओं को स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। इस समय तुम हो ब्राहमण। देवताएं भी स्वदर्शनचक्रधारी नहीं बनते। तुम ब्राहमण ही बनते हो। परन्तु यह अलंकार तुमको शोभेंगे नहीं। विष्णु को शोभती हैं। तुमको शोभता भी नहीं। और तुम स्थाई भी नहीं रहते हो। घड़ी2 उपर नीचे होते रहते हो। बाप कहते हैं बच्चे लाईट हाउस बनो। सब को रास्ता बताना हैं। अपने शान्ति धाम जाने की। तुम्हारी बुधि में शान्तिधाम, सुखधाम हैं। सुखधाम में पवित्रता शान्ति सम्पन्न होती हैं। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले हम आत्माएं शान्ति धाम में थी। अब नहीं हैं। फिर बाबा आया हुआ हैं ले जाने। वहां शान्ति की बात नहीं रहती। हम सुखधाम में जावेंगे वाया शान्तिधाम। तो शान्तिधाम को भी याद करना पड़े। बच्चे जानते हैं बाबा को आरगन्स मिली हैं डिफेक्टेड। भल तमोप्रधान कहते नहीं हैं यह तो ईशारे में समझा जाता हैं। बाप समझाते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में प्रवेश करता हूं जब कि इनकी वानप्रस्त अवस्था होती हैं। फिर दूसरे वानप्रस्त अवस्था तो आवेंगी नहीं। यह सिध कर बताते हैं। मनुष्य मुंझते हैं ब्रहमा को क्यों रखा हैं। और ब्रहमा को भगवान तो कहा नहीं जाता। ब्रहमा भी देवता कैसे बनते हैं, ब्राहमण सो देवता बने रहे हैं। तो जरूर ब्रहमा भी होगा ना। नहीं तो ब्राहमण कहां से आवें। ब्राहमण ही मनुष्य से देवता बनते हैं। तो जरूर पतित हैं जो फिर पावन देवता बनते हैं। भगवानुवाच: हैं ना मैं बहुत जन्मों के अन्त में साधारण बुढ़े तन में प्रवेश करता हूं। तो उनका भी नाम होगा ना। दो हो जाते हैं। तुम लिखते भी हो शिव बाबा केअर आफ ब्रहमा दादा। बाप कहते हैं मैं इन में प्रवेश कर फिर इनका नाम बदलता हूं। बहुतों के नाम बदले। क्योंकि यह बेहद का सन्यास होता हैं ना। सन्यासी बनते हैं उनका भी नाम बदलते हैं। इनका हैं बेहद का सन्यास। ब्राहमणों के बाप का नाम भी जरूर ब्रहमा ही होगा। और कोई हो न सके। यह खेल कितना अटपटिया हैं। कल्प2 यह चक्र रिपीट होता हैं। आधा कल्प जीत फिर आधा कल्प हराते हैं। दोनो बराबर हैं। तो हरावेंगे भी बराबर। माया भी कोई कम नहीं। ढेर हराते हैं। सीढ़ी को तो तुम समझ गये हो। कैसे हम नीचे उतरते हैं। 84 जन्म लेते हैं टाईमपास हो जाता हैं। टीक टीक होती जाती हैं इस टिक2 से ही ड्रामा फिरता हैं। यह तो नहीं बतावेंगे कि इतने सेकन्ड में हमारी 84 जन्म पुरी हुई। कितने सेकन्ड पास हुये होंगे। डेट बदलते गये, मास, सम्बत बदलता गया। कितने वर्ष कितने विक्स, कितने दिन, कितने घन्टे पास किये। यह भी हिसाब हैं ना। बाबा टोटल कह देते हैं अभी तुम्हारी पिछाड़ी हैं। तुमने 84 जन्म ऐसे लिये हैं। यह टिक2 चलते2 5000 वर्ष आकर पुरे हुये हैं। अब बाप ने कितनी अच्छी युक्ति बताई हैं। याद की यात्रा से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसके लिए पुरा पुरुषार्थ करना हैं। कोशिश फिर भी ड्रामा पलैन अनुसार ही। ऐसे नहीं कोई समझे 5 घन्टा बदली हम 3 घंटों में

18-11-67 3

गाड़ी चलाये लेंगे। नहीं। ड्रामा पलेने अनुसार सब की गाड़ी चलती ही रहती है। यह सब बातें अच्छी रीत समझने की हैं। बाप सुनाते ही हैं धारणा करने लिए। स्कूल में पढ़ते 2 जब बड़ा परीक्षा पास कर लेते हैं तो फिर पहली बातें भूल जाते हैं। पास्ट हो गया ना। जो पास हुआ सो खतम। "अभी तुम समझते हो जो पास हुआ सो फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। ड्रामा की समझ अभी तुम बच्चों को मिली हैं। इस ड्रामा के अन्दर हम 84 जन्म लेते हैं। और कोई मनुष्य यह बातें नहीं जानते। यह बातें तुम यहां ही आकर सुनते हो और समझते हो। 84 जन्मों अनुसार ही भक्ति करते हैं। ज्ञान भी फिर उसी अनुसार लेंगे। आगे पीछे नहीं। जिन्हों ने शिव बाबा की भक्ति शुरू की हैं अव्यभिचारी वह ही आकर पहले ज्ञान लेंगे। यह भी हिसाब हैं ना। हिसाब भी बहुत महीन हैं। परन्तु डिटेल में जास्ती नहीं जाना हैं। बाप कहते हैं टाईम वेस्ट मत करो। जास्ती यह ख्याल न करो। मुल बात हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना हैं। मैं आया ही हूं सतोप्रधान बनाने। तुम्हारी सारी रेस है ही याद की यात्रा पर। ऊंच जीवन बनाना हैं याद की यात्रा से। घर गृहस्थ में रहते पवित्र बनना कितना डिफिकल्ट बताते हैं। कहते हैं हमारा कुटुम्ब बहुत बड़ा हैं। खान-पान का बहुत खिट-पिट चलता हैं। बाबा कहते हैं यह तो होगा ही। सब कलियुगी लोकलाज कुल की मर्यादा हैं। वह जरूर छोड़नी पड़े। अभी तो सबको पवित्र गरीब बनने कहा जाता हैं। मीरा भक्तिन थी। परन्तु उनको कहा थोड़े ही गया तुम पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। वह पवित्र रहना अच्छा समझती थी। उनको कृष्ण का सा0 होता था। भक्ति माल में सिरोमणि गाई जाती हैं। ज्ञान माल भी आधा कल्प की हैं। तुम्हारी हैं ज्ञान माल। यह एक ही स्कूल हैं कहां जगह तुम पढ़ते हो। कितने ब्रैंचेज निकलते जाते हैं। नाम ही रख देते हैं सच्चीगीता पाठशाला। तो झूठी पाठशाला कौन सी हैं। जो भी शुद्रों की पाठशालायें हैं वह सब हैं झूठी। तुम ब्राह्मणों की हैं सच्ची सच्ची पाठशाला। कहां शुद्र पैर, कहां तुम ब्राह्मण चोटी। दुनिया सब है शुद्रों की पाठशाला। साधु सन्त सब शुद्र हैं। बाबा ने समझाया हैं सन्यासि हठयोगियों को गीता भी पढ़ने की हैं नहीं। वह राजयोग सिखलाये न सके। वह तो ब्रहम को, तत्व को मानने वाले तत्व ज्ञानी हैं। वह इन बातों को मानेंगे नहीं। वह तो जंगल में रहते हैं। आजकल तमोप्रधान बने हैं तो वह ताकत ही नहीं जो उन्हों को जंगल आदि में कोई खाना आदि पहुंचावे। नीचे उतरने की ताकत खतम हो गई हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हैं। जो पहले2 आते हैं उनमें ताकत रहती है। इसलिए नाम भी होता हैं। तमोप्रधान का नामाचार नही होगा। सतोप्रधान का ही नामाचार होता हैं। नई आत्मायें जो आती हैं वह तो प्युर सतोप्रधान हैं ना। अभी सबसे जास्ती मान हैं शंकराचार्य का।। सब आकर उनको माथा टेकते हैं। जरूर कोई शुद्ध आत्म ने उनमें प्रवेश किया हैं। गुरूनानक में शुद्ध आत्मा ने प्रवेश किया तो कितना उनका मान हो गया गृहस्थी तो पतित ही होते हैं। आत्मा ने प्रवेश किया तो गुरू नानक का कितना मान हो गया। वह लोग सिर्फ नानक गुरू नहीं कहेंगे। वास्तव में गुरू तो हैं नहीं। वह किसकी सदगति कर न सके। कहते भी सदगुरू अकाल। अपने मुख से उनकी महिमा भी करते हैं। फिर अपनी पूजा बैठ कराते हैं। अकाल मूर्त तो वह हैं। जिसकी महिमा गाते हैं ओंकार ... सच्चा सदगुरू वह हैं। बाकि तो ढेर हैं। कितने उनके पालोअर्स हैं। गुरू हैं नहीं। परन्तु नाम पड़ता हैं तो घमन्ड आ जाता हैं। कहते भी हैं मनुष्य को देवता बनाने वाला सदगुरूअकाल मूर्तवह हैं। वह बाप ही आकर तुमको कहते हैं बच्चे। दुसरा कोई कह न सके। आत्म अकाल मूर्त हैं। यह तुम्हारा अकाल तख्त हैं। सभी मनुष्य मात्र को अकाल मूर्त(आत्मा) के तख्त हैं। बोलती-चालती वह अकाल मूर्त हैं। अभी तुम तमोप्रधान बन पड़े हो। इसलिए बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। आत्मा सतोप्रधान बन जाये। तुम्हारी एमआबजेक्ट ही यह हैं। हम यह (ल0ना0) बनते हैं। अभी हम संगम पर हैं। अब ड्रामा पुरा होता हैं। हमको वापस जाना हैं। यह भी याद करना पड़े। तब तो विकर्म विनाश हो। कितना समझाते रहते हैं। अच्छा मीठे 2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग।